International Journal of Applied Research 2018; 4(4): 447-449

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(4): 447-449
www.allresearchjournal.com
Received: 14-02-2018
Accepted: 19-03-2018

डॉ. अनिल गुप्ता
सह–आचार्य, (चित्रकला),
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट,
जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अनिल गुप्ता
सह–आचार्य, (चित्रकला),
राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट,
जयपुर, राजस्थान, भारत

उद्यान सज्जा – पब्लिक आर्ट (राजस्थान के संदर्भ में)

डॉ. अनिल गुप्ता

सरांश
जनकला पर विचार करते ही एक प्रश्न विशेष रूप से मस्तिष्क में उभरता है, कि क्या जनकला वह है, जो सार्वजनिक स्थल पर स्थित है और आम आदमी के लिए भी सुलभ है या वह कला है, जो आम आदमी के लिए और आम आदमी द्वारा रची गई है। कलाकृति चाहे एक महान कलाकार के द्वारा रची गई हो या एक आम आदमी के द्वारा महत्वपूर्ण यह है कि वह कला कहाँ प्रदर्शित है अगर आम आदमी के लिए वह कलादीर्घाओं से निकलकर सार्वजनिक स्थानों या खुले स्थानों पर जनता के बीच प्रदर्शित या प्रस्तुत होती है तो वह कला जनकला की श्रेणी में आ जाती है। जनकला के लिए दूसरा बिन्दु यह महत्वपूर्ण है कि रचनाकार की कलाकृति में जनहित उद्देश्य है या नहीं। अगर जनहित उद्देश्य से बनाई गई कलाकृति जनता के सामने प्रदर्शित होती है तो वह सच्ची जनकला है। आम आदमी के सौन्दर्यबोध के लिए, उसके रसास्वादन के लिए रची गई कलाकृति जनकला का सशक्त उदाहरण होती है।

मुख्य भाब्द : उद्यान, पब्लिक आर्ट, जीव–जन्तुओं, ऋतु

प्रस्तावनाः
राजस्थान में उद्यान–सज्जा भी जनकला के अंतर्गत आती है। जिस प्रकार उद्यान को फूलों एवं झाड़ियों की आकृतियों से सजाया जाता है। वह भी एक प्रकार की जनकला है। आज पब्लिक आर्ट में भितिचित्र, मूर्तिशिल्प या उद्यान सज्जा के लिए सर्जित फूलों एवं झाड़ियों से बनाई हुई कलाकृतियाँ ही सम्मिलित नहीं है, बल्कि कलात्मक तरीके से पानी के फव्वारे एवं रंग–बिरंगी रोशनियों के उपयोग से किया हुआ सृजन भी एक कलाकृति के रूप में 'पब्लिक आर्ट' में शामिल किया जा सकता है। जैसा कि जवाहर सर्किल जयपुर के उद्यान में किया गया है, यहाँ शाम ढलते ही सामान्य जन की भीड़ जमा हो जाती है। यह भीड़ भ्रमण करने के उद्देश्य से नही आती, बल्कि यहां हर शाम 8 बजे से 9 बजे तक चलने वाले फाउण्टेन की कलात्मकता के दर्शन करने आती है। यहाँ पर एक कलात्मक अद्भुत नजारा देखने को मिलता है। रात के अंधेरे में रंग–बिरंगी रोशनी के साथ मधुर संगीत की लय और ताल पर नृत्य करते हुये फव्वारे जनता के चेहरे पर आश्चर्य के भाव लाये बिना नहीं रह पाते। ऐसा अद्भुत नजारा शायद ही कहीं देखने को मिले पानी की बनी चादर पर चलचित्र को दिखाना और मधुर संगीत का पानी के साथ ताल से ताल मिलाकर नृत्य करना। वास्तव में रोमांच भर देने वाला नजारा है। देशभक्ति गीतों की वो गुंज जो हर आदमी में जोश भर देती है और इन गीतों के साथ सुर से सुर मिलाकर लोग गाये बिना नही रह सकते। वास्तव में यह पब्लिक आर्ट का नवीन उदाहरण है जो हर आदमी को अपने रंग में रंग देता है। यही सच्ची जनकला है, जहाँ हर दर्शक अपने आपको भूलाकर इन फव्वारों की कलात्मकता और संगीत में लीन हो जाता है और अपने मन में देशभक्ति के भाव उत्पन्न कर लेता है। यह एक मनोवैज्ञानिक कलात्मक प्रभाव है,जो पब्लिक आर्ट के प्रस्तुतिकरण से आम आदमी को प्रभावित करता है।
पब्लिक आर्ट न सिर्फ नगरीय सौन्दर्य के लिए प्रदर्शित या प्रस्तुत की जाती है बल्कि आम आदमी को कलात्मकता एवं सौन्दर्यबोध प्रदान करने के लिए की गयी गतिविधियाँ या प्रस्तुतिकरण है। जिसमें आज उद्यान सज्जा का महत्वपूर्ण योगदान है। आम आदमी कला दर्शन के लिए कला दीर्घाओं या कला केन्द्रों में नहीं जाता, परन्तु मन की शान्ति के लिए उद्यान में सुबह–शाम भ्रमण करने अवश्य ही जाता है। इसलिए उद्यानों में पब्लिक आर्ट की जाती है, ताकि आम आदमी कला दर्शन से सौन्दर्यबोध प्राप्त कर सके एवं कला की उपयोगिता एवं कला के मायने समझ सके उद्यानों को सजाने के उद्देश्य के साथ सौन्दर्यबोध का उद्देश्य भी अपने स्थान पर महत्व रखता है। फूलों से कलात्मक आकृतियां बनाना, झाड़ियों से विभिनन जीव–जन्तुओं की आकृतियां सर्जित करना। जैसे हाथी, ऊंट, घोड़ा, जिराफ, शेर एवं डायनासोर आदि। इन आकृतियों को बच्चों के रोमांच के लिए सर्जित किया जाता है।

परन्तु इनका बच्चों के अलावा, जवान, बूढ़े यानी सभी श्रेणी के लोक आनन्द उठाते हैं। आजकल विभिन्न प्रकार के उद्यान सर्जित किये जाते हैं – जैसे विज्ञान उद्यान, तकनीक उद्यान, पर्यावरण उद्यान एवं सामाजिक उद्यान। इस प्रकार के उद्यानों में संबंधित विषय के अनुसार पब्लिक आर्ट रचा जाता है। जैसे विज्ञान उद्यान में जीव–जन्तुओं डायनासौर आदि के कलात्मक शिल्प एवं उसी से संबंधित सजावट की जाती है। तकनीकि उद्यान में मशीन की तकनीक से कलात्मकता का प्रस्तुतिकरण और पर्यावरण उद्यान में फूलों–कांटो, पेड़,–पौधों से पब्लिक आर्ट को प्रस्तुत करना आदि शामिल किया जाता है। उद्यान सज्जा जनकला में आजकल मधुर संगीत एवं विभिन्न रंग–बिरंगी रोशनियों से भी पब्लिक आर्ट रचा जाता है। विभिन्न प्रकार के फूलों से उद्यान सज्जा करना तो पुरानी बात हो गयी, परन्तु आजकल उनमें कुछ अन्य वस्तु जोड़कर नवीन सर्जन किया जाने लगा है। जैसे कि आजकल उद्यानों में घास के बीच में क्षेत्र विशेष पर रंगीन फूलों को इस प्रकार लगाया जाता है कि उनके कुछ अलग तरह की आकृति बनती है। जैसे फूलों के कोने पर अनुपयोगी ड्रम (केन) को लीटा कर स्थाई यप से रख दिया जाता है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि केने में से निकलकर फूल बिखर गये हैं। इसके अलावा मोटी लकड़ी या सूखे मोटे पेड़ के तने को काटकर उसमें भी फूल और पौधे लगाये जाते हैं या फिर अनुपयोगी वस्तुएं जैसे पुरानी कुर्सी, मोटे टायर्स, लोहे के बॉक्स, कांच की बोतल और जूतों में भी मिट्टी डालकर उद्यान सज्जान की जाती है। नदी के विभिन्न प्रकार के पत्थरों एवं विभिन्न प्रकार के पहाड़ों के लम्बे, चपटे विभिन्न श्रेणी के पत्थर इस प्रकार की पब्लिक आर्ट में काम में लिये जाते हैं। इन पत्थरों से कलात्मक आकृतियां बनाई जाती हैं या फिर फूलों के पास सुरक्षा के लिए क्षेत्र रेखांकित सीमा बनाई जाती है। दीवारों को भी इन्हीं पत्थरों से सजाया जाता है। हर उद्यान को भिन्न तरीके से सजाया जाता है। ताकी हर उद्यान की सज्जा की सर्जनात्मकता सजावट अपने आप में नवीन और अन्य उद्यान से भिन्न हो ताकी उद्यान की अपनी एक पहचान बन सके।

(1) कपूर चन्द कुलिश पार्क –

इसमें जयपुर विकास प्राधिकरण का पूरा योगदान रहा है और हाल ही में जयपुर नगर निगम के द्वारा 3.6 करोड़ रूपये की महत्वाकांक्षी योजना इसको विकसित करने के लिए बनाई गयी है। इस पार्क की संकल्पना इस प्रकार से कि पूरे पार्क में ऋतु युक्त पुष्प सज्जित होंगे, ये भ्रमणकारियों को खुशबू से आनन्दित करेंगे। हर एक नई ऋतु लोगों का नये फूलों के साथ स्वागत करेगी। इस पार्क में छोटे–छोटे पोखर बनाये जायेंगे, जहाँ गई तरह के सहज व शानदार जलीय पौधे तथा कई किस्मों के फूल होंगे कमल सहित। इस पार्क में आधुनिक पौधशाला होगी, जो कुशल लोगो द्वारा संभाली जायेगी।

(2) मयूर वाटिका –

जयपुर नगर का मयूर वाटिका जिसको लोग 'पिकोक गार्डन' के नाम से जानते हैं। यह जयपुर के मालवीय नगर के क्षेत्र में जवाहर लाल नेहरू मार्ग पर बनी पुलिया के नीचे स्थित है, जिसका उद्घाटन श्रीमती वसुन्धरा राजे माननीय मुख्यमंत्री राजस्थान के द्वारा दिनांक 16 दिसम्बर, 2006 को सम्पन्न हुआ। इसको जनकला का हिस्सा बनाने का महत्वपूर्ण योगदान श्री अनूप बरतरिया का है, जिसके द्वारा इसकी परिकल्पना व वास्तुशिल्प तैयार कराया गया है। वास्तव में इनके हुनर को मानना पड़ेगा क्योंकि इन्होंने जयपुर नगर में जितने भी मूर्तिशिल्प परिकल्पित किये हैं'' वे तारीफ के काबिल और सराहनीय रहे हैं। इसलिए इनको पिंकसिटी आर्टिस्ट का नाम दिया गया है। मयूर वाटिका में मयूरों की अलग–अलग मुद्राओं में बनाये गये मूर्तिशिल्प वास्तव में कलात्मक व सराहनीय है, जो जीवन्त प्रतीत होते हैं।

इन वाटिका में मयूरों के मूर्तिशिल्पों को अलग–अलग मुद्राओं में दिखाया गया है। जिसमें कोई स्तम्भ पर बैठा है तो कोई धास में बैठा है, कोई दाने चुन रहा है तो कोई पानी पी रहा है, कहीं मयूरों को जोड़े के साथ दर्शाया है, तो कहीं अकेला दिखाया है। इस प्रकार पूरी वाटिका में मयूरों के ही मूर्तिशिल्प है, इसी वजह से इसका नाम मयूर वाटिका रखा गया है।

जयपुर नगर की जनकला का यह उदाहरण बड़ा ही निराला है, जिनमें मयूरों की बनावट इतनी कलात्मक है कि उन्हें देखकर सामान्यजन को प्रतीत होता है कि ये वास्तविक है। जब कोई व्यक्ति उनके पास जाकर देखता है, तब उन्हें पता चलता है कि ये तो वास्तविक नहीं बल्कि मूर्तिशिल्प हैं। प्रातःकाल व सांयकाल लोग यहाँ इनका आनन्द प्राप्त करने आते हैं और जनकला से परिचित होते हें इस प्रकार मयूर वाटिका का जनकला में महत्वपूर्ण स्थान है।

(3) कनक वृंदावन घाटी –

कनक वृन्दावन घाटी जयपुर से आमेर रोड़ पर आमेर किले से जुड़ी हुई है। कनक वृन्दावन घाटी जयपुर का राजस्थान की रेगिस्तानी भूमि में एक अति सुन्दर स्थान है। कनक वृन्दावन आमेर के किले के बाहरी भाग से जुड़ी हुई नाहरगढ़ की तलहटी में स्थित है। पुराने आंकड़ों के हिसाब से सुन्दर हरी घाटी को महाराजा सवाई जयसिंह द्वारा लगभग 280 वर्ष पूर्व कनक वृन्दावन घाटी नाम दिया गया। घाटी राजा को पौराणिक वृन्दावन (भगवान कृष्ण की भूमि) प्रतीत होती थी। तदोपरान्त उन्होंने वहाँ पर श्री गोविन्द देव जी की मूर्ति स्थापित की।

कनक घाटी को इस रूप में वरदान माना जाता है कि यहाँ पर अश्वमेघ यज्ञ के लिए कई नदियों का जल इकट्टा हुआ था। गोविन्द देव जी मंदिर सम्पूर्ण घाटी में आध्यात्मिक की पवित्रता का संचार करता है। मंदिर इसकी छतरियों तथा दर्पण कार्य के लिए हुए अति सौन्दर्य पूर्ण दिखाई देता है। गर्भ–गृह में भगवान का सिंहासन है जिस पर कलात्मक रूप से अंलकरण कार्य किया गया है।

कनक घाटी अरावली पहाड़ियों से घीरी हुई व जयपुर के तीनों किलों से अद्भुत दिखाई पड़ती है। कनक घाटी एक विस्तृत स्थान घेरे हुए है। जहाँ पर विकसित बगीचे लगे हुए हैं। घाटी की सुन्दरता, ढांक व कादम्ब वृक्षों से ढकी हुई, पानी की धारा, खिलते हुए फूल, झरने और कमल तालाब से बनी हुई है। कनक घाटी में एक तरफ छानबावड़ी नदी बहती है जो वातावरण को ठण्डी हवा से अनुकूल बनाये रखती है। आठ भागों में बांटे हुए बगीचे में बहुत सारे झरने हैं। झरने परिक्रमा के नाम से मार्बल पर खुदाई कर बनाये गये हैं। बगीचे की तस्वीर बहुत ही रोमांचक है। इसके आकर्षक दृश्य के कारण यह बहुत ही बॉलीवुड फिल्मों की पृष्ठभूमि के रूप में काम ली जा चुकी है। रात के समय यह बहुत ही चमकदार दिखाई देती है। कनक घाटी में आगन्तुकों के लिए बैठने व मौजमस्ती करने के लिए उत्तम स्थान है।

कनक वृंदावन घाटी में कृष्ण भगवान की लीलाओं पर बने मूर्तिशिल्प जनकला का परिचय देते हैं। यहां पर फूलों से की गई सजावट, बैठने के लिए बनायी गयी हरी–भरी घास की चादर, ये सब जनकला के नमूने ही तो हैं। कनक घाटी वृंदावन वास्तव में देखने व सराहने योग्य है। यह ढालू भूमि पर स्थित है अगर इसके प्रवेशद्वार से हम अवलोकन करते हैं तो यह आसमान को छुता हुआ प्रतीत होता है। इसका यही आकर्षण इसको जनकला में संजाये हुए है। सामान्य जन का यहाँ घुमने आना, इसकी सुन्दरता की तारीफ करना और इससे प्रभावित होना ये सब कारण ही तो है जो इस कनक वृंदावन घाटी को जनकला में शामिल करते हैं।

(4) घास से बने मूर्तिशिल्प, अजमेर जनपथ –

अजमेर जनपथ के निकट घास से बने मूर्तिशिल्प लोगों के आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं, जिनका निर्माण फेलीसिटी मिडोज् द्वारा मात्र आम लोगों को आकर्षित करने हेतु कराया गया है, न की किसी कला विशेष वर्ग के लिए। मूर्तिशिल्प का आकर्षण देखते ही बनता है, चार ऊँट एक–दूसरे के सम्मुख बैठी आकृति में बनाये गये। जिन्हें देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि मानों अथाह् परिश्रम करने के बाद फूरसत के समय में एक–दूसरे से संवाद कर रहे हों।

मूर्तिशिल्प को निर्माण करने हेतु लोहे के छड़ों से ऊँटों के शरीर पर ढांचा बनाया गया। जिनके ऊपर घास की परत प्राकृतिक रूप से चढ़ाई गयी है। शिल्प के चारों ओर सुन्दर हरी–भरी धास विश्राम का सुख देती प्रतीत होती है।

(5) बीकानेर का गंगा निवास पब्लिक पार्क –

महाराजा गंगासिंह के नाम पर बना गंगा निवास सार्वजनिक उद्यान दुर्ग के सम्मुख सूर सारंगत्रलकुण्ड के निकट है। पार्क के प्रवेश हेतु मुख्य द्वारा के अलावा चारों दिशाओं में घर द्वार बने हुए हैं। पार्क के एक कोने में महाराज डूंगर सिंह की मूर्ति है तथा मुख्य द्वार के सम्मुख महाराजा गंगा सिंह की मूर्ति, इसके अलावा पूरा पार्क फूलों की कलात्मक झाड़ियों से सजा हुआ है।

(6) चम्बल उद्यान (कोटा) सन् 1992 में विकसित चम्बल उद्यान

कोटा शहर में चबंल नदी के तट पर लगभग दस एकड़ भूमि में स्थित यह उद्यान श्रेष्ठतम उद्यानों में से एक है। चट्टानी भूमि पर विकसित इस उद्यान के लिए भूतल को समतल करके एक स्थान पर प्राकृतिक एवं मौलिक रूप में विकसित किया गया है। उद्यान में एक बड़ा फव्वारा एवं कई आकर्षक फव्वारों से युक्त मूर्तियाँ विद्यमान हैं आजमन के लिए चम्बल नदी में नौका विहार की सुविधा भी इसी उद्यान से उपलब्ध है। यह उद्यान सभी आयु वर्ग के सैलानियों को आकर्षित करता है। बच्चों के लिए बिजली से चलने वाली टॉय–ट्रेन, मेरी–गो–राउण्ड झूला, लक्ष्मण झूला व अन्य झूले हैं विशालकाय मगरमच्छ भी यहां देखे जा सकते हैं सबसे कलात्मक तो यहां के फलों की कलाकृतियां एवं फव्वारों युक्त मूर्तियां है, जो जनकला स्वरूप है।

(7) सहेलियों की बाड़ी (उदयपुर) –

उदयपुर की जनकला के अत्यधिक सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हमें सहेलियों की बाड़ी में मिलते हैं। यहाँ पर राजा–महाराजाओं के काल से लेकर आधुनिक काल तक के कई मूर्तिशिल्प देखने को मिलते हैं। इस बाड़ी में लगभग बीस जनकला के नमूने दृष्टव्य है। जिसमें छतरी के नीचे नारी आकृति, फव्वारा लिए कई नारी आकृतियां एवं पशु–पक्षियों की आकृतियां इत्यादि इन आकृतियों का समन्वित रूप हमें देखने को मिलता है। यह विभिन्न प्रकार की आकृतियां आमजन को सौन्दर्यानुभूमि का आभास कराते हैं। साथ ही जीवन के तनावों से भी मुक्ति प्रदान करते हैं। यहां आने के बाद आमजन का ह्रदय सहज ही प्रसन्न हो उठता है। इसी सन्दर्भ में उदयपुर सिटी रेलवे स्टेशन पर उकेरित टेराकोटा को विवेचित करना प्रासंगिक होगा।

(8) सुभाष उद्यान (अजमेर) :–

सुभाष उद्यान अजमेर शहर के मध्य में स्थित है, तथा यह बहुत बड़े क्षेत्र में विकसित है। इसमें जैन धर्म के स्तूप भी है तथा कहीं–कहीं माण्डने बने हैं तथा कई कलाकृतियों का निर्माण कर रखा है। इसी उद्यान में सुभाष चन्द्र बोस का मूर्तिशिल्प बना हुआ है। यह मूर्तिशिल्प काले रंग में बना है। इसके अलावा अनेक पेड़–पौधे हैं, जो जनसामान्य को शान्ति का अनुभव कराते हैं।

(9) पिलानी (झुंझुनू) –

पिलानी के ख्याति प्राप्त कलाकार मातुराम वर्मा ने 1987 में पंचवटी में श्री हनुमान जी की 20 फीट की प्रतिमा जिसके कंधों पर श्रीराम एवं लक्ष्मण्रा बैठे हैं, उसका निर्माण किया उसी के साथ यहां अनेक मूर्तिशिल्प बनाये हुये हैं। इन मूर्तियों की कलात्मकता में चार चांद लगाने वाले यहां के फूल एवं पेड़–पौधे हैं, जो इस पंचवटी नामक उद्यान की शान है, जो जनसामान्य को सौन्दर्यानुभूति प्रदान करते हैं पिलानी में ऐसे बहुत से कलात्मक उद्यान है, यहां के बिरला मन्दिर के आस–पास, म्युजियम के आस–पास का पूरा क्षेत्र सुन्दर फूलों से सजा हुआ है, जो जनकला के उद्यान सज्जा के उदाहरण हैं।

संदर्भ :–

1. डॉ. आभासिंह : दृश्यकला, उपकार प्रकाशन, 2013, आगरा।
2. Purbhi Shridhar. Poster Girl for Bollywood, FEMINA, 2010.
3. लेख : गार्डन की खूबसूरती, पृ.स. 2, 4 फरवरी, 2011, दैनिक भास्कर।
4. लेख : हैगिंग गार्डन, पृ.स. 8, 26 अप्रैल, 2014, दैनिक भास्कर।